राजनीति नहीं, संस्कृति और प्रकृति भारत को अखंड बनाएगी

वीर अर्जुन संवाददाता

नई दिल्ली। अखण्ड भारत संकल्प दिवस के अवसर पर राजधानी के प्रतिष्ठित पी जी डी ए वी महाविद्यालय (सांध्य) के सभागार में भारत भारती, दिल्ली प्रान्त व इसी महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह में आज़ाद हिन्द सेना (फ़ौज) के संस्थापक सदस्य 98 वर्षीय लेफ़्टिनेंट आर.माधवन की उपस्थिति ने सभागार को रोमांचित और उत्साहित कर दिया।

भारत माता की जय और वन्दे मातरम् के नारों की गूंज के बीच मुख्य अतिथि वरिष्ठ व प्रख्यात अधिवक्ता, समाज सेवी, विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री आलोक कुमार ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में भारत को प्रकृति और संस्कृति का एक ऐसा राष्ट्र बताया जिसके उत्तर में हिमालय व दक्षिण में महासागर है। यह वह देवभूमि है जिसने कभी अपने सैन्य बल से नहीं अपितु स्नेह एवं सद्भाव की संस्कृति के माध्यम से पूरे विश्व को आलोकित किया है। आक्रांताओं की दुर्जनता के कारण हमारे कुछ स्वजन अपनी उपासना पद्धति को बदलने को बाध्य हुए तो दूसरी ओर पश्चिम की व्यापार नीति के कारण समाज में विभेद और धर्मांतरण के अमानवीय प्रयास हुए।

मज़हबी व जिहादी उन्माद की खण्डित मानसिकता ने इस प्रकृति और संस्कृति के अनूठे केन्द्र को अशान्त करने की अपनी योजना के अन्तर्गत 1947 में सीमाओं को विभाजित करने में सफलता पाई लेकिन यह अप्राकृतिक होने के कारण अस्थाई है। इसलिए इस राष्ट्र का प्रत्येक सजग नागरिक भारत को पुन: अखण्ड देखना चाहता है क्योंकि इसी में विश्व कल्याण निहित है ।

इससे पूर्व पी जी डी ए वी कॉलेज (सांध्य) के प्रधानाचार्य प्रोफ़ेसर रवीन्द्र गुप्ता ने मंचासीन अतिथियों तथा सभागार में उपस्थित सभी प्रबुद्ध श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि खंडित देव मूर्ति का पूजन नहीं किया जाता। श्री ओमप्रकाश जी ने भारत भारती के कार्य क्षेत्र के बारे में जानकारी दी। इस कार्यक्रम में भारत के परमवीर चक्र विजेताओं की चित्रावली का महाविद्यालय प्रांगण में प्राचार्य और समस्त अतिथियों द्वारा अनावरण किया गया तथा देश विभाजन संबंधित महाविद्यालय पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई ।